

मत्स्यमहापुराण

(सचित्र, हिन्दी-अनुवादसहित)

| | | | | |
|--------|----------|----|---------|----------|
| त्वमेव | माता | च | पिता | त्वमेव |
| त्वमेव | बन्धुश्च | | सखा | त्वमेव । |
| त्वमेव | विद्या | | द्रविणं | त्वमेव |
| त्वमेव | सर्वं | मम | | देवदेव ॥ |

विषय-सूची

| अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या | अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या |
|--------|--|--------------|--------|---|--------------|
| १- | मङ्गलाचरण, शौनक आदि मुनियोंका सूतजीसे पुराणविषयक प्रश्न, सूतद्वारा मत्स्यपुराणका वर्णनारम्भ, भगवान् विष्णुका मत्स्यरूपसे सूर्यनन्दन मनुको मोहित करना, तत्पश्चात् उन्हें आगामी प्रलयकालकी सूचना देना | १३ | | उत्पत्ति | ३३ |
| २- | मनुका मत्स्यभगवान्से युगान्तविषयक प्रश्न, मत्स्यका प्रलयके स्वरूपका वर्णन करके अन्तर्धान हो जाना, प्रलयकाल उपस्थित होनेपर मनुका जीवोंको नौकापर चढ़ाकर उसे महामत्स्यके सींगमें शेषनागकी रस्सीसे बाँधना एवं उनसे सृष्टि आदिके विषयमें विविध प्रश्न करना और मत्स्यभगवान्का उत्तर देना | १६ | ८- | प्रत्येक सर्गके अधिपतियोंका अभिषेचन तथा पृथुका राज्याभिषेक | ३७ |
| ३- | मनुका मत्स्यभगवान्से ब्रह्माके चतुर्मुख होने तथा लोकोंकी सृष्टि करनेके विषयमें प्रश्न एवं मत्स्यभगवान्द्वारा उत्तररूपमें ब्रह्मासे वेद, सरस्वती, पाँचवें मुख और मनु आदिकी उत्पत्तिका कथन | १९ | ९- | मन्वन्तरोंके चौदह देवताओं और सप्तर्षियोंका विवरण | ३९ |
| ४- | पुत्रीकी ओर बार-बार अवलोकन करनेसे ब्रह्मा दोषी क्यों नहीं हुए—एतद्विषयक मनुका प्रश्न, मत्स्यभगवान्का उत्तर तथा इसी प्रसङ्गमें आदिसृष्टिका वर्णन | २३ | १०- | महाराज पृथुका चरित्र और पृथ्वी-दोहनका वृत्तान्त | ४२ |
| ५- | दक्ष-कन्याओंकी उत्पत्ति, कुमार कार्तिकेयका जन्म तथा दक्ष-कन्याओंद्वारा देवयोनियोंका प्रादुर्भाव | २७ | ११- | सूर्यवंश और चन्द्रवंशका वर्णन तथा इलाका वृत्तान्त | ४५ |
| ६- | कश्यप-वंशका विस्तृत वर्णन | ३० | १२- | इलाका वृत्तान्त तथा इक्ष्वाकु-वंशका वर्णन | ५० |
| ७- | मरुतोंकी उत्पत्तिके प्रसङ्गमें दितिकी तपस्या, मदनद्वादशी-व्रतका वर्णन, कश्यपद्वारा दितिको वरदान, गर्भिणी स्त्रियोंके लिये नियम तथा मरुतोंकी | | १३- | पितृ-वंश-वर्णन तथा सतीके वृत्तान्त-प्रसङ्गमें देवीके एक सौ आठ नामोंका विवरण | ५४ |
| | | | १४- | अच्छोदाका पितृलोकसे पतन तथा उसकी प्रार्थनापर पितरोंद्वारा उसका पुनरुद्धार | ५८ |
| | | | १५- | पितृ-वंशका वर्णन, पीवरीका वृत्तान्त तथा श्राद्ध-विधिका कथन | ६० |
| | | | १६- | श्राद्धोंके विविध भेद, उनके करनेका समय तथा श्राद्धमें निमन्त्रित करनेयोग्य ब्राह्मणके लक्षण | ६३ |
| | | | १७- | साधारण एवं आभ्युदयिक श्राद्धकी विधिका विवरण | ६८ |
| | | | १८- | एकोद्दिष्ट और सपिण्डीकरण श्राद्धकी विधि | ७४ |
| | | | १९- | श्राद्धोंमें पितरोंके लिये प्रदान किये गये हव्य-कव्यकी प्राप्ति का विवरण | ७६ |
| | | | २०- | महर्षि कौशिकके पुत्रोंका वृत्तान्त तथा पिपीलिकाकी कथा | ७८ |
| | | | २१- | ब्रह्मदत्तका वृत्तान्त तथा चार चक्रवाकोंकी गतिका वर्णन | ८० |
| | | | २२- | श्राद्धके योग्य समय, स्थान (तीर्थ) तथा कुछ विशेष नियमोंका वर्णन | ८४ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या | अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या |
|--------|---|--------------|--------|---|--------------|
| २३- | चन्द्रमाकी उत्पत्ति, उनका दक्ष प्रजापतिकी कन्याओंके साथ विवाह, चन्द्रमाद्वारा राजसूययज्ञका अनुष्ठान, उनकी तारापर आसक्ति, उनका भगवान् शङ्करके साथ युद्ध तथा ब्रह्माजीका बीच-बचाव करके युद्ध शान्त करना | ९० | | पास जाना तथा शुक्राचार्यका ययातिको बूढ़े होनेका शाप देना | १२१ |
| २४- | ताराके गर्भसे बुधकी उत्पत्ति, पुरुरवाका जन्म, पुरुरवा और उर्वशीकी कथा, नहुष-पुत्रोंके वर्णन-प्रसङ्गमें ययातिका वृत्तान्त | ९४ | ३३- | ययातिका अपने यदु आदि पुत्रोंसे अपनी युवावस्था देकर वृद्धावस्था लेनेके लिये आग्रह और उनके अस्वीकार करनेपर उन्हें शाप देना, फिर पूरुको जरावस्था देकर उसकी युवावस्था लेना तथा उसे वर प्रदान करना | १२५ |
| २५- | कचका शिष्यभावसे शुक्राचार्य और देवयानीकी सेवामें संलग्न होना और अनेक कष्ट सहनेके पश्चात् मृतसंजीविनी-विद्या प्राप्त करना | ९९ | ३४- | राजा ययातिका विषय-सेवन और वैराग्य तथा पूरुका राज्याभिषेक करके वनमें जाना | १२८ |
| २६- | देवयानीका कचसे पाणिग्रहणके लिये अनुरोध, कचकी अस्वीकृति तथा दोनोंका एक-दूसरेको शाप देना | १०५ | ३५- | वनमें राजा ययातिकी तपस्या और उन्हें स्वर्गलोककी प्राप्ति | १३० |
| २७- | देवयानी और शर्मिष्ठाका कलह, शर्मिष्ठाद्वारा कुएँमें गिरायी गयी देवयानीको ययातिका निकालना और देवयानीका शुक्राचार्यके साथ वार्तालाप | १०८ | ३६- | इन्द्रके पूछनेपर ययातिका अपने पुत्र पूरुको दिये हुए उपदेशकी चर्चा करना | १३२ |
| २८- | शुक्राचार्यद्वारा देवयानीको समझाना और देवयानीका असंतोष | १११ | ३७- | ययातिका स्वर्गसे पतन और अष्टकका उनसे प्रश्न करना | १३४ |
| २९- | शुक्राचार्यका वृषपर्वाको फटकारना तथा उसे छोड़कर जानेके लिये उद्यत होना और वृषपर्वाके आदेशसे शर्मिष्ठाका देवयानीकी दासी बनकर शुक्राचार्य तथा देवयानीको सन्तुष्ट करना | ११२ | ३८- | ययाति और अष्टकका संवाद | १३५ |
| ३०- | सखियोंसहित देवयानी और शर्मिष्ठाका वन-विहार, राजा ययातिका आगमन, देवयानीके साथ बातचीत तथा विवाह | ११५ | ३९- | अष्टक और ययातिका संवाद | १३८ |
| ३१- | ययातिसे देवयानीको पुत्रप्राप्ति, ययाति और शर्मिष्ठाका एकान्त-मिलन और उनसे एक पुत्रका जन्म | ११९ | ४०- | ययाति और अष्टकका आश्रमधर्म-सम्बन्धी संवाद | १४२ |
| ३२- | देवयानी और शर्मिष्ठाका संवाद, ययातिसे शर्मिष्ठाके पुत्र होनेकी बात जानकर देवयानीका रूठना और अपने पिताके | | ४१- | अष्टक-ययाति-संवाद और ययातिद्वारा दूसरोंके दिये हुए पुण्यदानको अस्वीकार करना | १४४ |
| | | | ४२- | राजा ययातिका वसुमान् और शिबिके प्रतिग्रहको अस्वीकार करना तथा अष्टक आदि चारों राजाओंके साथ स्वर्गमें जाना | १४६ |
| | | | ४३- | ययाति-वंश-वर्णन, यदुवंशका वृत्तान्त तथा कार्तवीर्य अर्जुनकी कथा | १५० |
| | | | ४४- | कार्तवीर्यका आदित्यके तेजसे सम्पन्न होकर वृक्षोंको जलाना, महर्षि आपवद्वारा कार्तवीर्यको शाप और क्रोष्टुके वंशका वर्णन | १५४ |
| | | | ४५- | वृष्णिवंशके वर्णन-प्रसङ्गमें स्यमन्तक-मणिकी कथा | १६० |
| | | | ४६- | वृष्णि-वंशका वर्णन | १६३ |
| | | | ४७- | श्रीकृष्ण-चरित्रका वर्णन, दैत्योंका | |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या | अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या |
|--------|--|--------------|--------|--|--------------|
| | इतिहास तथा देवासुर-संग्रामके प्रसङ्गमें विभिन्न अवान्तर कथाएँ | १६५ | | उसका माहात्म्य | २५५ |
| ४८- | तुर्वसु और द्रुह्यके वंशका वर्णन, अनुके वंश-वर्णनमें बलिकी कथा और कर्णकी उत्पत्तिका प्रसङ्ग | १८८ | ६५- | अक्षयतृतीया-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २५७ |
| ४९- | पूरु-वंशके वर्णन-प्रसङ्गमें भरत-वंशकी कथा, भरद्वाजकी उत्पत्ति और उनके वंशका कथन, नीप-वंशका वर्णन तथा पौरवोंका इतिहास | १९५ | ६६- | सारस्वत-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २५८ |
| ५०- | पूरुवंशी नरेशोंका विस्तृत इतिहास | २०१ | ६७- | सूर्य-चन्द्र-ग्रहणके समय स्नानकी विधि और उसका माहात्म्य | २६० |
| ५१- | अग्नि-वंशका वर्णन तथा उनके भेदोपभेदका कथन | २०७ | ६८- | सप्तमीस्नपन-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २६२ |
| ५२- | कर्मयोगकी महत्ता | २११ | ६९- | भीमद्वादशी-व्रतका विधान | २६६ |
| ५३- | पुराणोंकी नामावलि और उनका संक्षिप्त परिचय | २१४ | ७०- | पण्यस्त्री-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २७२ |
| ५४- | नक्षत्र-पुरुष-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २२१ | ७१- | अशून्यशयन (द्वितीया)-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २७७ |
| ५५- | आदित्यशयन-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २२५ | ७२- | अङ्गारक-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २७९ |
| ५६- | श्रीकृष्णाष्टमी-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २२८ | ७३- | शुक्र और गुरुकी पूजा-विधि | २८३ |
| ५७- | रोहिणीचन्द्रशयन-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २३० | ७४- | कल्याणसप्तमी-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २८४ |
| ५८- | तालाब, बगीचा, कुआँ, बावली, पुष्करिणी तथा देवमन्दिरकी प्रतिष्ठा आदिका विधान | २३३ | ७५- | विशोकसप्तमी-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २८६ |
| ५९- | वृक्ष लगानेकी विधि | २३८ | ७६- | फलसप्तमी-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २८७ |
| ६०- | सौभाग्यशयन-व्रत तथा जगद्धात्री सतीकी आराधना | २४० | ७७- | शर्करासप्तमी-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २८९ |
| ६१- | अगस्त्य और वसिष्ठकी दिव्य उत्पत्ति, उर्वशी अप्सराका प्राकट्य और अगस्त्यके लिये अर्घ्य-प्रदान करनेकी विधि एवं माहात्म्य | २४४ | ७८- | कमलसप्तमी-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २९० |
| ६२- | अनन्ततृतीया-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २४९ | ७९- | मन्दारसप्तमी-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २९१ |
| ६३- | रसकल्याणिनी-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २५२ | ८०- | शुभसप्तमी-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | २९३ |
| ६४- | आर्द्रानन्दकरी तृतीया-व्रतकी विधि और | | ८१- | विशोकद्वादशी-व्रतकी विधि | २९४ |
| | | | ८२- | गुड-धेनुके दानकी विधि और उसकी महिमा | २९७ |
| | | | ८३- | पर्वतदानके दस भेद, धान्यशैलके दानकी विधि और उसका माहात्म्य | २९९ |
| | | | ८४- | लवणाचलके दानकी विधि और उसका माहात्म्य | ३०४ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या | अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या |
|--------|--|--------------|--------|---|--------------|
| ८५- | गुडपर्वतके दानकी विधि और उसका माहात्म्य | ३०५ | १०५- | प्रयागमें मरनेवालोंकी गति और गो-दानका महत्त्व | ३५९ |
| ८६- | सुवर्णाचलके दानकी विधि और उसका माहात्म्य | ३०६ | १०६- | प्रयाग-माहात्म्य-वर्णन-प्रसङ्गमें वहाँके विविध तीर्थोंका वर्णन | ३६१ |
| ८७- | तिलशैलके दानकी विधि और उसका माहात्म्य | ३०७ | १०७- | प्रयाग-स्थित विविध तीर्थोंका वर्णन | ३६५ |
| ८८- | कार्पासाचलके दानकी विधि और उसका माहात्म्य | ३०७ | १०८- | प्रयागमें अनशन-व्रत तथा एक मासतकके निवास (कल्पवास)-का महत्त्व | ३६७ |
| ८९- | घृताचलके दानकी विधि और उसका माहात्म्य | ३०८ | १०९- | अन्य तीर्थोंकी अपेक्षा प्रयागकी महत्ताका वर्णन | ३७० |
| ९०- | रत्नाचलके दानकी विधि और उसका माहात्म्य | ३०९ | ११०- | जगत्के समस्त पवित्र तीर्थोंका प्रयागमें निवास | ३७२ |
| ९१- | रजताचलके दानकी विधि और उसका माहात्म्य | ३१० | १११- | प्रयागमें ब्रह्मा, विष्णु और शिवके निवासका वर्णन | ३७४ |
| ९२- | शर्कराशैलके दानकी विधि और उसका माहात्म्य तथा राजा धर्ममूर्तिके वृत्तान्त-प्रसङ्गमें लवणाचल-दानका महत्त्व | ३११ | ११२- | भगवान् वासुदेवद्वारा प्रयागके माहात्म्यका वर्णन | ३७५ |
| ९३- | शान्तिक एवं पौष्टिक कर्मों तथा नवग्रहशान्तिकी विधिका वर्णन | ३१५ | ११३- | भूगोलका विस्तृत वर्णन | ३७७ |
| ९४- | नवग्रहोंके स्वरूपका वर्णन | ३२८ | ११४- | भारतवर्ष, किम्पुरुषवर्ष तथा हरिवर्षका वर्णन | ३८३ |
| ९५- | माहेश्वर-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | ३२९ | ११५- | राजा पुरुरवाके पूर्वजन्मका वृत्तान्त | ३९० |
| ९६- | सर्वफलत्याग-व्रतका विधान और उसका माहात्म्य | ३३२ | ११६- | ऐरावती नदीका वर्णन | ३९१ |
| ९७- | आदित्यवार-कल्पका विधान और माहात्म्य | ३३४ | ११७- | हिमालयकी अद्भुत छटाका वर्णन | ३९४ |
| ९८- | संक्रान्ति-व्रतके उद्यापनकी विधि | ३३७ | ११८- | हिमालयकी अनोखी शोभा तथा अत्रि-आश्रमका वर्णन | ३९६ |
| ९९- | विभूतिद्वादशी-व्रतकी विधि और उसका माहात्म्य | ३३८ | ११९- | आश्रमस्थ विवरमें पुरुरवाका प्रवेश, आश्रमकी शोभाका वर्णन तथा पुरुरवाकी तपस्या | ४०१ |
| १००- | विभूतिद्वादशीके प्रसङ्गमें राजा पुष्पवाहनका वृत्तान्त | ३४० | १२०- | राजा पुरुरवाकी तपस्या, गन्धर्वों और अप्सराओंकी क्रीड़ा, महर्षि अत्रिका आगमन तथा राजाको वरप्राप्ति | ४०५ |
| १०१- | साठ व्रतोंका विधान और माहात्म्य | ३४४ | १२१- | कैलास पर्वतका वर्णन, गङ्गाकी सात धाराओंका वृत्तान्त तथा जम्बूद्वीपका विवरण | ४०९ |
| १०२- | स्नान और तर्पणकी विधि | ३५१ | १२२- | शाकद्वीप, कुशद्वीप, क्रौञ्चद्वीप और शाल्मलद्वीपका वर्णन | ४१५ |
| १०३- | युधिष्ठिरकी चिन्ता, उनकी महर्षि मार्कण्डेयसे भेंट और महर्षिद्वारा प्रयाग-माहात्म्यका उपक्रम | ३५४ | १२३- | गोमेदकद्वीप और पुष्करद्वीपका वर्णन | ४२३ |
| १०४- | प्रयाग-माहात्म्य-प्रसङ्गमें प्रयाग-क्षेत्रके विविध तीर्थस्थानोंका वर्णन | ३५७ | १२४- | मत्स्यावतार-कथा-प्रसङ्ग | ४२८ |
| | | | १२४- | सूर्य और चन्द्रमाकी गतिका वर्णन | ४२९ |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या | अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या |
|--------|--|--------------|--------|---|--------------|
| १२५- | सूर्यकी गति और उनके रथका वर्णन | ४३६ | | बुझाकर त्रिपुरकी रक्षामें नियुक्त करना तथा त्रिपुरकौमुदीका वर्णन | ४९७ |
| १२६- | सूर्य-रथपर प्रत्येक मासमें भिन्न-भिन्न देवताओंका अधिरोहण तथा चन्द्रमाकी विचित्र गति | ४४० | १४०- | देवताओं और दानवोंका भीषण संग्राम, नन्दीश्वरद्वारा विद्युन्मालीका वध, मयका पलायन तथा शङ्करजीकी त्रिपुरपर विजय | ५०१ |
| १२७- | ग्रहोंके रथका वर्णन और ध्रुवकी प्रशंसा ... | ४४६ | १४१- | पुरूरवाका सूर्य-चन्द्रके साथ समागम और पितृ-तर्पण, पर्वसंधिका वर्णन तथा श्राद्धभोजी पितरोंका निरूपण | ५०८ |
| १२८- | देव-गृहों तथा सूर्य-चन्द्रमाकी गतिका वर्णन | ४४८ | १४२- | युगोंकी काल-गणना तथा त्रेतायुगका वर्णन | ५१५ |
| १२९- | त्रिपुर-निर्माणका वर्णन | ४५४ | १४३- | यज्ञकी प्रवृत्ति तथा विधिका वर्णन | ५२० |
| १३०- | दानवश्रेष्ठ मयद्वारा त्रिपुरकी रचना | ४५८ | १४४- | द्वापर और कलियुगकी प्रवृत्ति तथा उनके स्वभावका वर्णन, राजा प्रमत्तिका वृत्तान्त तथा पुनः कृतयुगके प्रारम्भका वर्णन | ५२४ |
| १३१- | त्रिपुरमें दैत्योंका सुखपूर्वक निवास, मयका स्वप्न-दर्शन और दैत्योंका अत्याचार | ४६० | १४५- | युगानुसार प्राणियोंकी शरीर-स्थिति एवं वर्ण-व्यवस्थाका वर्णन, श्रौत-स्मार्त, धर्म, तप, यज्ञ, क्षमा, शम, दया आदि गुणोंका लक्षण, चातुर्होत्रकी विधि तथा पाँच प्रकारके ऋषियोंका वर्णन | ५३२ |
| १३२- | त्रिपुरवासी दैत्योंका अत्याचार, देवताओंका ब्रह्माकी शरणमें जाना और ब्रह्मासहित शिवजीके पास जाकर उनकी स्तुति करना | ४६५ | १४६- | वज्राङ्गकी उत्पत्ति, उसके द्वारा इन्द्रका बन्धन, ब्रह्मा और कश्यपद्वारा समझाये जानेपर इन्द्रको बन्धनमुक्त करना, वज्राङ्गका विवाह, तप तथा ब्रह्माद्वारा वरदान | ५४० |
| १३३- | त्रिपुर-विध्वंसार्थ शिवजीके विचित्र रथका निर्माण और देवताओंके साथ उनका युद्धके लिये प्रस्थान | ४६८ | १४७- | ब्रह्माके वरदानसे तारकासुरकी उत्पत्ति और उसका राज्याभिषेक | ५४७ |
| १३४- | देवताओंसहित शङ्करजीका त्रिपुरपर आक्रमण, त्रिपुरमें देवर्षि नारदका आगमन तथा युद्धार्थ असुरोंकी तैयारी | ४७३ | १४८- | तारकासुरकी तपस्या और ब्रह्माद्वारा उसे वरदानप्राप्ति, देवासुरसंग्रामकी तैयारी तथा दोनों दलोंकी सेनाओंका वर्णन | ५४९ |
| १३५- | शङ्करजीकी आज्ञासे इन्द्रका त्रिपुरपर आक्रमण, दोनों सेनाओंमें भीषण संग्राम, विद्युन्मालीका वध, देवताओंकी विजय और दानवोंका युद्धविमुख होकर त्रिपुरमें प्रवेश | ४७६ | १४९- | देवासुर-संग्रामका प्रारम्भ | ५५८ |
| १३६- | मयका चिन्तित होकर अद्भुत बावलीका निर्माण करना, नन्दिकेश्वर और तारकासुरका भीषण युद्ध तथा प्रमथगणोंकी मारसे विमुख होकर दानवोंका त्रिपुर-प्रवेश | ४८३ | १५०- | देवताओं और असुरोंकी सेनाओंमें अपनी-अपनी जोड़ीके साथ घमासान युद्ध, देवताओंके विकल होनेपर भगवान् विष्णुका युद्धभूमिमें आगमन और कालनेमिको परास्त कर उसे जीवित | |
| १३७- | वापी-शोषणसे मयको चिन्ता, मय आदि दानवोंका त्रिपुरसहित समुद्रमें प्रवेश तथा शङ्करजीका इन्द्रको युद्ध करनेका आदेश | ४८८ | | | |
| १३८- | देवताओं और दानवोंमें घमासान युद्ध तथा तारकासुरका वध | ४९१ | | | |
| १३९- | दानवराज मयका दानवोंको समझा- | | | | |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या | अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या |
|--------|---|--------------|--------|--|--------------|
| | छोड़ देना | ५६० | | वीरकद्वारा रोका जाना | ६५६ |
| १५१- | भगवान् विष्णुपर दानवोंका सामूहिक आक्रमण, भगवान् विष्णुका अद्भुत युद्ध-कौशल और उनके द्वारा दानवसेनापति ग्रसनकी मृत्यु | ५७८ | १५८- | वीरकद्वारा पार्वतीकी स्तुति, पार्वती और शङ्करका पुनः समागम, अग्रिको शाप, कृत्तिकाओंकी प्रतिज्ञा और स्कन्दकी उत्पत्ति | ६५८ |
| १५२- | भगवान् विष्णुका मथन आदि दैत्योंके साथ भीषण संग्राम और अन्तमें घायल होकर युद्धसे पलायन | ५८१ | १५९- | स्कन्दकी उत्पत्ति, उनका नामकरण, उनसे देवताओंकी प्रार्थना और उनके द्वारा देवताओंको आश्वासन, तारकके पास देवदूतद्वारा संदेश भेजा जाना और सिद्धोंद्वारा कुमारकी स्तुति | ६६२ |
| १५३- | भगवान् विष्णु और इन्द्रका परस्पर उत्साहवर्धक वार्तालाप, देवताओंद्वारा पुनः सैन्य-संगठन, इन्द्रका असुरोंके साथ भीषण युद्ध, गजासुर और जम्भासुरकी मृत्यु, तारकासुरका घोर संग्राम और उसके द्वारा भगवान् विष्णुसहित देवताओंका बंदी बनाया जाना | ५८४ | १६०- | तारकासुर और कुमारका भीषण युद्ध तथा कुमारद्वारा तारकका वध | ६६६ |
| १५४- | तारकके आदेशसे देवताओंकी बन्धन-मुक्ति, देवताओंका ब्रह्माके पास जाना और अपनी विपत्तिगाथा सुनाना, ब्रह्माद्वारा तारक-वधके उपायका वर्णन, रात्रिदेवीका प्रसङ्ग, उनका पार्वतीरूपमें जन्म, काम-दहन और रतिकी प्रार्थना, पार्वतीकी तपस्या, शिव-पार्वती-विवाह तथा पार्वतीका वीरकको पुत्ररूपमें स्वीकार करना | ६०१ | १६१- | हिरण्यकशिपुकी तपस्या, ब्रह्माद्वारा उसे वरप्राप्ति, हिरण्यकशिपुका अत्याचार, विष्णुद्वारा देवताओंको अभयदान, भगवान् विष्णुका नृसिंहरूप धारण करके हिरण्यकशिपुकी विचित्र सभामें प्रवेश | ६६८ |
| १५५- | भगवान् शिवद्वारा पार्वतीके वर्णपर आक्षेप, पार्वतीका वीरकको अन्तःपुरका रक्षक नियुक्त कर पुनः तपश्चर्याके लिये प्रस्थान | ६५० | १६२- | प्रह्लादद्वारा भगवान् नरसिंहका स्वरूप-वर्णन तथा नरसिंह और दानवोंका भीषण युद्ध | ६७५ |
| १५६- | कुसुमामोदिनी और पार्वतीकी गुप्त मन्त्रणा, पार्वतीका तपस्यामें निरत होना, आडि दैत्यका पार्वती-रूपमें शङ्करके पास जाना और मृत्युको प्राप्त होना तथा पार्वतीद्वारा वीरकको शाप | ६५२ | १६३- | नरसिंह और हिरण्यकशिपुका भीषण युद्ध, दैत्योंको उत्पातदर्शन, हिरण्यकशिपुका अत्याचार, नरसिंहद्वारा हिरण्यकशिपुका वध तथा ब्रह्माद्वारा नरसिंहकी स्तुति | ६७८ |
| १५७- | पार्वतीद्वारा वीरकको शाप, ब्रह्माका पार्वती तथा एकानंशाको वरदान, एकानंशाका विन्ध्याचलके लिये प्रस्थान, पार्वतीका भवनद्वारपर पहुँचना और | | १६४- | पद्मोद्भवके प्रसङ्गमें मनुद्वारा भगवान् विष्णुसे सृष्टिसम्बन्धी विविध प्रश्न और भगवान्का उत्तर | ६८५ |
| | | | १६५- | चारों युगोंकी व्यवस्थाका वर्णन | ६८८ |
| | | | १६६- | महाप्रलयका वर्णन | ६९० |
| | | | १६७- | भगवान् विष्णुका एकार्णवके जलमें शयन, मार्कण्डेयको आश्चर्य तथा भगवान् विष्णु और मार्कण्डेयका संवाद | ६९२ |
| | | | १६८- | पञ्चमहाभूतोंका प्राकट्य तथा नारायणकी नाभिसे कमलकी उत्पत्ति | ६९७ |
| | | | १६९- | नाभिकमलसे ब्रह्माका प्रादुर्भाव तथा उस कमलका साङ्गोपाङ्ग वर्णन | ६९८ |
| | | | १७०- | मधु-कैटभकी उत्पत्ति, उनका ब्रह्माके | |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या | अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या |
|--------|--|--------------|--------|---|--------------|
| | साथ वार्तालाप और भगवान् द्वारा वध | ७०० | | और उसका माहात्म्य तथा हरिकेशको | |
| १७१- | ब्रह्माके मानस पुत्रोंकी उत्पत्ति, दक्षकी | | | शिवजीद्वारा वरप्राप्ति | ७४४ |
| | बारह कन्याओंका वृत्तान्त, ब्रह्माद्वारा | | १८१- | अविमुक्तक्षेत्र-(वाराणसी) का माहात्म्य | ७५३ |
| | सृष्टिका विकास तथा विविध | | १८२- | अविमुक्त-माहात्म्य | ७५५ |
| | देवयोनियोंकी उत्पत्ति | ७०२ | १८३- | अविमुक्तमाहात्म्यके प्रसङ्गमें शिव- | |
| १७२- | तारकामय-संग्रामकी भूमिका एवं | | | पार्वतीका प्रश्नोत्तर | ७५७ |
| | भगवान् विष्णुका महासमुद्रके रूपमें | | १८४- | काशीकी महिमाका वर्णन | ७६५ |
| | वर्णन, तारकादि असुरोंके अत्याचारसे | | १८५- | वाराणसी-माहात्म्य | ७७० |
| | दुःखी होकर देवताओंकी भगवान् | | १८६- | नर्मदा-माहात्म्यका उपक्रम | ७७६ |
| | विष्णुसे प्रार्थना और भगवान् का उन्हें | | १८७- | नर्मदा-माहात्म्यके प्रसङ्गमें पुनः | |
| | आश्वासन | ७०७ | | त्रिपुराख्यान | ७८० |
| १७३- | दैत्यों और दानवोंकी युद्धार्थ तैयारी | ७११ | १८८- | त्रिपुर-दाहका वृत्तान्त | ७८४ |
| १७४- | देवताओंका युद्धार्थ अभियान | ७१३ | १८९- | नर्मदा-कावेरी-संगमका माहात्म्य | ७९१ |
| १७५- | देवताओं और दानवोंका घमासान युद्ध, | | १९०- | नर्मदाके तटवर्ती तीर्थ | ७९२ |
| | मयकी तामसी माया, और्वाग्रिकी उत्पत्ति | | १९१- | नर्मदाके तटवर्ती तीर्थोंका माहात्म्य | ७९४ |
| | और महर्षि ऊर्वद्वारा हिरण्यकशिपुको | | १९२- | शुक्लतीर्थका माहात्म्य | ८०३ |
| | उसकी प्राप्ति | ७१७ | १९३- | नर्मदा-माहात्म्य-प्रसङ्गमें कपिलादि | |
| १७६- | चन्द्रमाकी सहायतासे वरुणद्वारा | | | विविध तीर्थोंका माहात्म्य, भृगुतीर्थका | |
| | और्वाग्रि-मायाका प्रशमन, मयद्वारा | | | माहात्म्य, भृगुमुनिकी तपस्या, शिव- | |
| | शैली-मायाका प्राकट्य, भगवान् | | | पार्वतीका उनके समक्ष प्रकट होना, | |
| | विष्णुके आदेशसे अग्नि और वायुद्वारा | | | भृगुद्वारा उनकी स्तुति और शिवजीद्वारा | |
| | उस मायाका निवारण तथा कालनेमिका | | | भृगुको वर प्रदान | ८०६ |
| | रणभूमिमें आगमन | ७२३ | १९४- | नर्मदातटवर्ती तीर्थोंका माहात्म्य | ८१२ |
| १७७- | देवताओं और दैत्योंकी सेनाओंकी अद्भुत | | १९५- | गोत्रप्रवर-निरूपण-प्रसङ्गमें भृगुवंशकी | |
| | मुठभेड़, कालनेमिका भीषण पराक्रम | | | परम्पराका विवरण | ८१६ |
| | और उसकी देवसेनापर विजय | ७२७ | १९६- | प्रवरानुकीर्तनमें महर्षि अङ्गिराके वंशका | |
| १७८- | कालनेमि और भगवान् विष्णुका | | | वर्णन | ८१९ |
| | रोषपूर्वक वार्तालाप और भीषण युद्ध, | | १९७- | महर्षि अत्रिके वंशका वर्णन | ८२३ |
| | विष्णुके चक्रके द्वारा कालनेमिका वध | | १९८- | प्रवरानुकीर्तनमें महर्षि विश्वामित्रके | |
| | और देवताओंको पुनः निज पदकी प्राप्ति .. | ७३२ | | वंशका वर्णन | ८२४ |
| १७९- | शिवजीके साथ अन्धकासुरका युद्ध, | | १९९- | गोत्रप्रवर-कीर्तनमें महर्षि कश्यपके | |
| | शिवजीद्वारा मातृकाओंकी सृष्टि, | | | वंशका वर्णन | ८२५ |
| | शिवजीके हाथों अन्धककी मृत्यु और | | २००- | गोत्रप्रवर-कीर्तनमें महर्षि वसिष्ठकी | |
| | उसे गणेशत्वकी प्राप्ति, मातृकाओंकी | | | शाखाका कथन | ८२७ |
| | विध्वंसलीला तथा विष्णुनिर्मित | | २०१- | प्रवरानुकीर्तनमें महर्षि पराशरके वंशका | |
| | देवियोंद्वारा उनका अवरोध | ७३८ | | वर्णन | ८२९ |
| १८०- | वाराणसी-माहात्म्यके प्रसङ्गमें हरिकेश | | २०२- | गोत्रप्रवरकीर्तनमें महर्षि अगस्त्य, | |
| | यक्षकी तपस्या, अविमुक्तकी शोभा | | | पुलह, पुलस्त्य और क्रतुकी | |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या | अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या |
|--------|--|--------------|--------|--|--------------|
| | शाखाओंका वर्णन | ८३२ | २२६- | सामान्य राजनीतिका निरूपण | ८८७ |
| २०३- | प्रवरकीर्तनमें धर्मके वंशका वर्णन | ८३३ | २२७- | दण्डनीतिका निरूपण | ८८९ |
| २०४- | श्राद्धकल्प—पितृगाथा—कीर्तन | ८३४ | २२८- | अद्भुत शान्तिका वर्णन | ९०५ |
| २०५- | धेनु-दान-विधि | ८३६ | २२९- | उत्पातोंके भेद तथा कतिपय ऋतुस्वभावजन्य शुभदायक अद्भुतोंका वर्णन | ९०८ |
| २०६- | कृष्णमृगचर्मके दानकी विधि और उसका माहात्म्य | ८३७ | २३०- | अद्भुत उत्पातके लक्षण तथा उनकी शान्तिके उपाय | ९१० |
| २०७- | उत्सर्ग किये जानेवाले वृषके लक्षण, वृषोत्सर्गका विधान और उसका महत्त्व | ८४० | २३१- | अग्निसम्बन्धी उत्पातके लक्षण तथा उनकी शान्तिके उपाय | ९११ |
| २०८- | सावित्री और सत्यवान्का चरित्र | ८४३ | २३२- | वृक्षजन्य उत्पातके लक्षण और उनकी शान्तिके उपाय | ९१२ |
| २०९- | सत्यवान्का सावित्रीको वनकी शोभा दिखाना | ८४५ | २३३- | वृष्टिजन्य उत्पातके लक्षण और उनकी शान्तिके उपाय | ९१४ |
| २१०- | यमराजका सत्यवान्के प्राणको बाँधना तथा सावित्री और यमराजका वार्तालाप | ८४८ | २३४- | जलाशयजनित विकृतियाँ और उनकी शान्तिके उपाय | ९१५ |
| २११- | सावित्रीको यमराजसे द्वितीय वरदानकी प्राप्ति | ८५० | २३५- | प्रसवजनित विकारका वर्णन और उसकी शान्ति | ९१५ |
| २१२- | यमराज-सावित्री-संवाद तथा यमराजद्वारा सावित्रीको तृतीय वरदानकी प्राप्ति | ८५२ | २३६- | उपस्कर-विकृतिके लक्षण और उनकी शान्ति | ९१६ |
| २१३- | सावित्रीकी विजय और सत्यवान्की बन्धन-मुक्ति | ८५४ | २३७- | पशु-पक्षीसम्बन्धी उत्पात और उनकी शान्ति | ९१७ |
| २१४- | सत्यवान्को जीवनलाभ तथा पत्नीसहित राजाको नेत्रज्योति एवं राज्यकी प्राप्ति | ८५६ | २३८- | राजाकी मृत्यु तथा देशके विनाश-सूचक लक्षण और उनकी शान्ति | ९१८ |
| २१५- | राजाका कर्तव्य, राजकर्मचारियोंके लक्षण तथा राजधर्मका निरूपण | ८५७ | २३९- | ग्रहयागका विधान | ९१९ |
| २१६- | राजकर्मचारियोंके धर्मका वर्णन | ८६४ | २४०- | राजाओंकी विजयार्थ यात्राका विधान | ९२२ |
| २१७- | दुर्ग-निर्माणकी विधि तथा राजाद्वारा दुर्गमें संग्रहणीय उपकरणोंका विवरण | ८६७ | २४१- | अङ्गस्फुरणके शुभाशुभ फल | ९२४ |
| २१८- | दुर्गमें संग्राह्य ओषधियोंका वर्णन | ८७३ | २४२- | शुभाशुभ स्वप्नोंके लक्षण | ९२६ |
| २१९- | विषयुक्त पदार्थोंके लक्षण एवं उससे राजाके बचनेके उपाय | ८७६ | २४३- | शुभाशुभ शकुनोंका निरूपण | ९२८ |
| २२०- | राजधर्म एवं सामान्य नीतिका वर्णन | ८७८ | २४४- | वामन-प्रादुर्भाव-प्रसङ्गमें श्रीभगवान्-द्वारा अदितिको वरदान | ९३० |
| २२१- | दैव और पुरुषार्थका वर्णन | ८८२ | २४५- | बलिद्वारा विष्णुकी निन्दापर प्रह्लादका उन्हें शाप, बलिका अनुनय, ब्रह्माजी-द्वारा वामनभगवान्का स्तवन, भगवान् वामनका देवताओंको आश्वासन तथा उनका बलिके यज्ञके लिये प्रस्थान | ९३४ |
| २२२- | साम-नीतिका वर्णन | ८८३ | २४६- | बलि-शुक्र-संवाद, वामनका बलिके यज्ञमें पदार्पण, बलिद्वारा उन्हें तीन | |
| २२३- | नीति चतुष्टयीके अन्तर्गत भेद-नीतिका वर्णन | ८८४ | | | |
| २२४- | दान-नीतिकी प्रशंसा | ८८५ | | | |
| २२५- | दण्डनीतिका वर्णन | ८८६ | | | |

| अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या | अध्याय | विषय | पृष्ठ-संख्या |
|--------|--|--------------|--------|---|--------------|
| | डग पृथ्वीका दान, वामनद्वारा बलिका बन्धन और वर प्रदान | ९४२ | २६५- | प्रतिमाके अधिवासन आदिकी विधि | १०१३ |
| २४७- | अर्जुनके वाराहावतारविषयक प्रश्न करनेपर शौनकजीद्वारा भगवत्स्वरूपका वर्णन | ९४८ | २६६- | प्रतिमा-प्रतिष्ठाकी विधि | १०१७ |
| २४८- | वराहभगवान्का प्रादुर्भाव, हिरण्याक्षद्वारा रसातलमें ले जायी गयी पृथ्वीदेवीद्वारा यज्ञवराहका स्तवन और भगवान्द्वारा उनका उद्धार | ९५२ | २६७- | देव (प्रतिमा)-प्रतिष्ठाके अङ्गभूत अभिषेक-स्नानका निरूपण | १०२२ |
| २४९- | अमृतप्राप्तिके लिये समुद्र-मन्थनका उपक्रम और वारुणी (मदिरा)-का प्रादुर्भाव | ९५७ | २६८- | वास्तु-शान्तिकी विधि | १०२५ |
| २५०- | अमृतार्थ समुद्र-मन्थन करते समय चन्द्रमासे लेकर विषतकका प्रादुर्भाव | ९६३ | २६९- | प्रासादोंके भेद और उनके निर्माणकी विधि | १०२८ |
| २५१- | अमृतका प्राकट्य, मोहिनीरूपधारी भगवान् विष्णुद्वारा देवताओंका अमृत- पान तथा देवासुरसंग्राम | ९६८ | २७०- | प्रासाद-संलग्न मण्डपोंके नाम, स्वरूप, भेद और उनके निर्माणकी विधि | १०३२ |
| २५२- | वास्तुके प्रादुर्भावकी कथा | ९७१ | २७१- | राजवंशानुकीर्तन | १०३५ |
| २५३- | वास्तु-चक्रका वर्णन | ९७३ | २७२- | कलियुगके प्रद्योतवंशी आदि राजाओंका वर्णन | १०३७ |
| २५४- | वास्तुशास्त्रके अन्तर्गत राजप्रासाद आदिकी निर्माण-विधि | ९७७ | २७३- | आन्ध्रवंशीय, शकवंशीय एवं यवनादि राजाओंका संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण ... | १०४० |
| २५५- | वास्तुविषयक वेधका विवरण | ९८१ | २७४- | षोडश दानान्तर्गत तुलादानका वर्णन | १०४६ |
| २५६- | वास्तु-प्रकरणमें गृह-निर्माणविधि | ९८३ | २७५- | हिरण्यगर्भदानकी विधि | १०५३ |
| २५७- | गृहनिर्माण (वास्तुकार्य)-में ग्राह्य काष्ठ | ९८६ | २७६- | ब्रह्माण्डदानकी विधि | १०५५ |
| २५८- | देवप्रतिमाका प्रमाण-निरूपण | ९८८ | २७७- | कल्पपादप-दान-विधि | १०५७ |
| २५९- | प्रतिमाओंके लक्षण, मान, आकार आदिका कथन | ९९३ | २७८- | गोसहस्र-दानकी विधि | १०५९ |
| २६०- | विविध देवताओंकी प्रतिमाओंका वर्णन | ९९६ | २७९- | कामधेनु-दानकी विधि | १०६२ |
| २६१- | सूर्यादि विभिन्न देवताओंकी प्रतिमाके स्वरूप, प्रतिष्ठा और पूजा आदिकी विधि | १००१ | २८०- | हिरण्याश्व-दानकी विधि | १०६३ |
| २६२- | पीठिकाओंके भेद, लक्षण और फल | १००५ | २८१- | हिरण्याश्वरथ-दानकी विधि | १०६५ |
| २६३- | शिवलिङ्गके निर्माणकी विधि | १००७ | २८२- | हेमहस्तिरथ-दानकी विधि | १०६६ |
| २६४- | प्रतिमा-प्रतिष्ठाके प्रसङ्गमें यज्ञाङ्गरूप कुण्डादिके निर्माणकी विधि | १०१० | २८३- | पञ्चलाङ्गल (हल) प्रदानकी विधि | १०६८ |
| | | | २८४- | हेमधरा (सुवर्णमयी पृथ्वी)-दानकी विधि | १०७० |
| | | | २८५- | विश्वचक्र-दानकी विधि | १०७१ |
| | | | २८६- | कनककल्पलता-दानकी विधि | १०७३ |
| | | | २८७- | सप्तसागर-दानकी विधि | १०७५ |
| | | | २८८- | रत्नधेनु-दानकी विधि | १०७६ |
| | | | २८९- | महाभूतघट-दानकी विधि | १०७८ |
| | | | २९०- | कल्पानुकीर्तन | १०७९ |
| | | | २९१- | मत्स्यपुराणकी अनुक्रमणिका | १०८२ |
| | | | | पुराण-श्रवण-कालमें पालनीय धर्म | १०८४ |